

॥ प्रभा ५ श्लोक १ नो. १०८

ध्याको

१
८

श्रीरामचंद्राय नमः ॥ श्लोक ॥ प्रभातां शार्बरीं दृष्ट्वा चंद्रनक्ष
त्रमंडितां ॥ ततः सुप्तो यथाकालं पार्थिवस्य निवेशनं ॥ १ ॥
प्रविवेश प्रबोधार्थं सुमंतो मंत्रिसत्तम ॥ १ ॥ टीका ॥ ज्ञप्तिषे
का व्यारघुनाथ ॥ प्रातः कालि सुसुदुर्लभा ॥ चंद्रदेखो निगु
रु पुष्पयुक्त ॥ वेगी सुमंत उरिल्ला ॥ १ ॥ सुमंत प्रधान बु
द्धिवंतु ॥ प्रबोधाव्या श्रीदशरथ ॥ जालाराज सुवना जांतु ॥
कैकयि युक्त नृप जेथे ॥ २ ॥ ज्ञप्तिषे चाव्यारघु नंदन ॥ रा
या होई सावधान ॥ जैकोनि प्रधान वचन ॥ सुखी पनद
शरथु ॥ ३ ॥ राम जाई लव नांतु ॥ कोणे तोडे बोलो मातु ॥
हातिचा जाई लरघु नाथु ॥ दुःखें सुखितु दशरथु ॥ ४ ॥
वनाधाडितो दशरथ ॥ ऐसिं जाई कलांचि मात ॥ वचन

२
नुलं घिरघु नाथ ॥ जाईल वनात तलाळ ॥ ५ ॥ रामासिनाहि
राज्य-चाड ॥ नाहिविषयाचे कोड ॥ मासे वाक्य अलिगोड ॥ घे
ईल होड वन वासाधि ॥ ६ ॥ वनाधाडितो ऐसिंगोठी ॥ काना
वचना होतां सेटी ॥ वनानिघेल उवाउठी ॥ जगजेठि श्रीराम
॥ ७ ॥ वन वासाधि हे कथा ॥ कानि जाई कतार घुनाथा ॥ व
नानिघेल तलता ॥ यासिनि जातां काय करूं ॥ ८ ॥ विशेषे
सिमा सीताक ॥ मिथ्या न करि रघुकुळ टिळक ॥ वनाजा
ईल अवश्यक ॥ दुःख शोक दशरथा ॥ ९ ॥ कैकयित वंजा
हे खोटी ॥ हटे विस्तारिली हे गोठि ॥ पाडिली श्रीरामे सितुटी ॥
दुःखे सृष्टि मुळितु ॥ १० ॥ कैकयित लगे सुमंता प्रति ॥ रा
यासि लागली से सुषुप्ति ॥ वेगी जाणा वार घुपति ॥ आ

२५
 ज्ञामजप्रतिगयाचि॥११॥ ऐसिं कैसिपां सुषुप्ति॥ क्षितित
 ळिलोळतो मूपति॥ मिथ्यामानुनियानिनि॥ निघेमागुति
 सुमंतु॥१२॥ तवं अनिषेकसामग्रि॥ सप्तामंडपाचा दा
 री॥ स्वयेवशिष्टविस्तारि॥ नानापरिउपचारे॥१३॥ वशि
 ष्टह्मणे सुमंतासि॥ सर्वसामग्रिसांगरायापासि॥ वेगी
 बोलाविरायासि॥ अनिषेकासि सुमहूर्चे॥१४॥ सदा
 फलितउदंबर॥ त्याचेपदपीठमनोहर॥ केलेअसेअ
 तिसुंदर॥ श्रीरामचंद्र अनिषेका॥१५॥ पद्रिव्याघ्रचर्म
 अहत॥ समग्रहिनखेपुछयुक्त॥ सिंहासनिविराजत॥
 वरासनाथश्रीरामा॥१६॥ सुवर्णकुंभशतानुशत॥ दी
 र्घनासवंडेवृषभश्वेत॥ सुवर्णशृंगारक्षीरयुक्त॥

वस्त्रं अहात अलिमुद्धे ॥१७॥ सिंधु संगम सुधा संगम ॥
गंगा यमुना त्रिवेणी संगम ॥ जळे आणिली पवित्र परम ॥
रघोत्तम अलिषेका ॥१८॥ सप्त कुश सप्त मलिका ॥ सप्त
ऋषि आणिले देखा ॥ चतुःसमुद्रि-व्या उदका ॥ अलि
षेका आणिले से ॥१९॥ श्वेत जश्वे सिसार्धुळरथ ॥ चंद्रो
पमळे त्रस्येत ॥ स्वेत यामर रत्न दंड युक्त ॥ सुवासित स्व
त व्यंजन ॥२०॥ गोरोधन हरिद्रा गौरव ॥ क्षीर पल्लव पत्र
पल्लव ॥ तोरणे बाणलि अमूर्ति ॥ राजे सर्व लिष्टि ॥२१॥
दधिमधु धताक्षता युक्त ॥ पूर्ण कलश साळंकत ॥ अ
ष्टौ कन्या दानार्थ ॥ उष्या लिष्टे अलिषेका ॥२२॥ मुग्ग
टकुंडले रत्न मेखळा ॥ बाहु अंगदे कंठ माळा ॥ सिद्ध

तासि॥ कोणो ठाई कोणो बसि सी॥ रामे काय बोलै नितु जसि॥
 लुजुमज पासि पाठविले॥ २३॥ कथ्ये बोलिली सति सीता॥ श्रीरा
 माच्या अलिपि टिपेंता॥ लक्ष्मणुकी पजिली बोलता॥ ते समू
 ळ कथा मज सांग॥ २४॥ सांडु न सज्ज सांगे जि जकांता॥ सांडु
 निशा माता पिता॥ वने सज्ज सांगे सांगे सांगे॥ त्या लक्ष्मणा
 परता धन्य नाहि॥ २५॥ धन्य धन्य ते सति सीता॥ धन्य धन्य
 तो लक्ष्मण नाता॥ धन्य जन्म रघुनाथ॥ पितृ वधू नाथ प्रतिपा
 ळी॥ २६॥ त्यासि कोठें सिकल जन्मी तिहि कोठें केलें जन्म॥
 जश्रु धारा गळति नयने॥ मूर्छा पनसुनः पुना॥ २७॥ तिहि को
 ठें केलें शयन॥ काय आत्तर पाप प्राकरण॥ कोठें केलें चरण सं
 वाहन॥ प्रातः प्रबोधन कोणें केलें॥ २८॥ त्यासि समूळ सांगवा

तर्हि॥ मित्राय कुरु रे सुमंता॥ धरुन धरे मास्या चित्ता॥ श्री
 रघुनाथा वाचुनिया॥ २९॥ श्रीराम सीता चालि चरणि॥
 हेम्या विरुद्ध केलि करणि॥ सुगौनि गडबड्या लोले धरणी॥
 कैकया वैरिणी वैरुके ले॥ ३०॥ जवं जवं आठ विरघुनाथा॥
 तवं तवं उमडु न संदे चित्ता॥ धीरुन धरवे सर्वथा॥
 हृदय स्फोट तोहो पादे॥ ३१॥ याचि वनवास वाची॥ वेगी सां
 गे रे सुमंता॥ काहि सुख हाई ले चित्ता॥ श्रीराम कथा आई
 कृता॥ ३२॥ श्लोक॥ सुमंतोक्तिः॥ नेशाष शंस गंगाया महामं
 श्रय राघवं॥ अनुज्ञातो निष्ठतो स्मि धार्मिके पां महात्मना॥ ६॥
 टीका॥ सुमंतु सांगे राया पासि॥ श्रीराम उतरें तांगें गेसि॥ र
 धु पाठ विलाकुत्सा पासि॥ आपण वनवासि पदा निगमने॥

३३॥ मांशपितृजातिष्वेदमाप्ता ॥ मन्त्रेनविमो गदुःखे निम
 ग्न ॥ सुसंताप्यालिघावेष्टाश्वासुन ॥ श्रीध्रज्जगन्मन्त्रमांति ॥
 ३४॥ चोदावस्वपवनकासीति ॥ श्रीयेईनशीर्षगति ॥ ऐं संसां
 गविले लुलाप्रति ॥ मज्जितालिश्रीराम ॥ ३५॥ सत्यवनवासल
 क्षणा ॥ तृपापणार्चि आक्षरपा ॥ सुकलेन्ये प्रावर्ण ॥ प्रातप्रबो
 धमेपक्षान्ति ॥ ३६॥ तिद्दिनलिके स्तुमांजन ॥ नोदिके लुफळ
 सक्षणा ॥ त्रिरात्रतिहिलिघाज ॥ जल्ले जळपीनदिस्तीति ॥
 ३७॥ ऐसिआईकताप्यगोती ॥ रावामुखितिपडिमासृष्टि ॥ दुः
 खे स्तुल उकळफुती ॥ लल्लाटपिदिआकाश ॥ ३८॥ गळिळ
 डकलाजोमासा ॥ जीयेमरेनाचडफडिजेसा ॥ दशरथाप्य
 लसीदशा ॥ मोहफासाविषपल ॥ ३९॥ सुमंतासापूकपिका

ॐ ॥ तुजें जाला जसे लसाचार ॥ तरि रथि घालु निरघुवीर ॥ आ
जिस तर मज पासि ॥ ४० ॥ राम भाक न संडि सर्वथा ॥ तो परतोन
नये मागुता ॥ मज चिवाउ निघारथा ॥ नेई तलतावन वासा ॥ ४१ ॥
काये करूं रे सुमंता ॥ स्वये श्रीराम ने देखतां ॥ जीउ जाईल तल
ता ॥ मज जंसाव स्या होलस ॥ ४२ ॥ श्रीरामा सवें गेली गति ॥ श्रीर
मा सवें चितवति ॥ श्रीरामा सवें गेली मति ॥ प्राण रामा प्रति जा
वो पाहे ॥ ४३ ॥ राम रूपि जडलें मन ॥ रामा सवें गेलें मन ॥ रामा
पासि जातिल प्राण ॥ सस जाण सुमंता ॥ ४४ ॥ श्रीरामाचे रूप गु
ण ॥ आविता मूर्छा आली पूर्ण ॥ मुखे सवें गेला प्राण ॥ राम
स्मरण करितां चि ॥ ४५ ॥ राम राम करितां स्वये स्मरण ॥ दशर
थे सांडिला प्राण ॥ मन बुद्धि इंद्रिये जाण ॥ रामार्पण ते केली ॥
४६ ॥ आवडी श्रीराम धरुनि पाटी ॥ राम नाम जपें वागु टि ॥

देहो तज्जु नि श्रीरामदृष्टि॥ रिघे वैकुंठि दशयु॥ ४७॥ संप्रेम आ
 वडि धरि लोम॥ दृष्टि ना संधि श्रीराम प्रेम॥ नार्थ निस्मर
 तां श्रीराम नाम॥ निधनि धर्म दारयो॥ ४८॥ मनी राघे ध्यानि
 राम॥ नयनि राम वदनि राम॥ तैसा स्मरता राम राम॥ प्राणा
 क म राया सि॥ ४९॥ करि तां श्रीरामा न स्मरण॥ विस्मरया सि
 जाले मरण॥ मव श्रीरामि जड ग्राण॥ देह निर्याप्य दशर
 था॥ ५०॥ श्रीरामा चि यो ज्ञात प्रीति॥ देहो त्यागि लज्ज मुपेति॥ कौ
 शल्या सुमित्रा सेव पीडिता॥ लक्षण प्राप्ति होय सि॥ ५१॥ जे वि
 आरि सो पा ल्या करि ता॥ प्रविष्ट प नु दिख्यो हातो॥ ते वि
 श्रीराम वना जाता॥ तोयि दशरथा निज मरुत॥ ५२॥ निःश
 ष पाश रल्या छट जछ॥ जे विघट नं दु को पेत काळ॥ न देख

तां श्रीराममुखक मळ ॥ मरे तत्काळ दशरथ ॥ ५३ ॥ सूर्यपावतां
जलमान ॥ जेविजांधारे कोंदे गगन ॥ तेवि जंतरतारघुनं
दन ॥ पावला मरणदशरथ ॥ ५४ ॥ श्रीरामविरहे उठाउठी ॥ द
शरथे सांडिली मृष्टि ॥ रागिवासा बोंब उठी ॥ कपाळ पिटिको
शल्या ॥ ५५ ॥ रामधाडिला वनसंकटी ॥ रागेरि घाला वैकुंठी ॥
कैकयिंपानली सुखसंतुष्टि ॥ राज्यपाटि तेवै सो ॥ ५६ ॥ वनादव
डिलारघुनाथ ॥ निःशेषनिमाला दशरथ ॥ कैकई चामनोरथ
॥ सुखस्वार्थपानला ॥ ५७ ॥ राज्यलोभुपरमदुःख ॥ त्याचा कैक
ई सिहरिख ॥ सुरें जनिषेका मस्तक ॥ राज्यसुखसोगावि
या ॥ ५८ ॥ पतिजंतिकाळे वक्र ॥ सावरि मस्तकि धराछत्र ॥ सि
संबोडुनि साचार ॥ युगमचा मरढळावे ॥ ५९ ॥ पतिसीजागी

चालु न जाधि॥ कैकई बैसवागजसुं दि॥ हाको बांबोधिपै ना
 दि॥ राजपदि अतिषेक॥ ६०॥ पुत्रबोडुनियदेसी॥ कैकई बै
 सवासिंहासीनि॥ रायासिपिंड दामदेउनि॥ राजभाजनिकेक
 पि॥ ६१॥ रायासिकरु निघटस्फाट॥ कैकई सीविस्तासुकाटा॥
 बतिसावाव्याये उद्धट॥ अतिचोखटषडरसी॥ ६२॥ सुपासि
 देतांतिवोदके॥ गोत्रकुहेनासि दुधवे॥ तवंतरेकैकपिसिह
 रिख॥ राज्यसुखसोगाव्या॥ ६३॥ असाहेकैकैचेकथन॥ व
 नागेलारघुनेदन॥ राजापावला निधन॥ साहागमनसुिक
 रिन॥ ६४॥ कैकई राहेलराज्यसोगासि॥ मीजाईनपतिसर
 सी॥ क्षणाधराहातांवे धैयसि॥ पामरासिपदोपदि॥ ६५॥ प
 लिजळतांधडधडा॥ आसिनरिघतिरांडासुंदा॥ तोडाविग

ल सरीफो डावा चुडा ॥ सुख भोगु पुढांतो आईका ॥ ६८ ॥
 काजळ कुंकु नाहि चंदन ॥ दाउ नये काळे वदन ॥ मास मासा
 वरि मंडन ॥ अलिंद न लाजेचे ॥ ६९ ॥ विधवा शोष नि अशो
 षन ॥ जीत प्रेत ते विधवा जाण ॥ विधवा मुख्य अपशकुन ॥ सु
 ख कोण जिण्याचे ॥ ७० ॥ वैधव्याचे महा दुःख ॥ सोसु सकं के
 क ई येक ॥ भोगाव पाराज्य सुख ॥ अलिक वतिक वैधव्या ॥
 ७१ ॥ केवळ देह लोपासाठी ॥ जेत वैरां जपाटि ॥ स्वप्नि सुखे
 सिन के भेटि ॥ दुःख कोटि अनिवार ॥ ७२ ॥ वैधव्याचे दुःख
 दारुण ॥ तेनि न सोहे अर्ध क्षण ॥ करितारा जे देह दहन ॥
 सहागमन मी करीन ॥ ७३ ॥ देखेन कौशल्येचे रुदन ॥ रा
 जपल्या घेति वदन ॥ दुःख तोडितिके सकान ॥ मुर्छापन पें

ये कि॥७१॥ ये कि स्या कषाले स्वये धेति॥ ये कि वक्षस्थले पीटिति॥
 ये कि अतिदुःखपडति॥ ये कि रडति अतिदुःखे॥७२॥ ये क
 दुःखवियोगरघुनाथा॥ दुसरे मरणदशरथा॥ तिसरे बंध
 व्यजाले साथा॥ मूळ अनर्ककोकई॥७३॥ को गाव्यारा
 ज्यपाटा॥ के क ई च्या मरद निष्ठा॥ तिघांके ल्यातीन कळा॥
 या मुख्यचेष्टा मंथरे त्या॥७४॥ श्रीरामादि वनप्रयाण॥
 दशरथासिलरीतमरेणा॥ यादि मंथरामुख्यकारण॥ ति
 चे नाक कान छे दावे॥७५॥ रातिपल्या अतिप्रबळ॥ दुःखे
 करिति हलका लोळ॥ जाले नारायण सकळ॥ अति को
 ल्हाळ नगरांत॥७६॥ जाऊंदति नरनादी॥ शोख करिति
 घराघरा॥ बांबपडली राजद्वारा॥ सेना निमंत्रि चडफाडि

ति॥७८॥ श्रीराम घालितां बाहेरी॥ अब दसा जालि न ग
री॥ राजा निमाला दुःख करी॥ घरो घरि जाकांतु॥७९॥
कैकयिंचे काळें तोंड॥ तिणे वाढविलें वरद बंड॥ तिसि मं
थरा मिळो निलंड॥ दुःख विलंड वाढविलें॥८०॥ जिचे निनि
माला निजकांत॥ तें कैकयिचा करावा घात॥ मंथरा घाला
चुन खडयात॥ राजीर धुलाय जमिषे का॥८१॥ वेगी ल
क्ष्मण जाणायथ॥ तो साधिल सर्वकार्यार्थ॥ ऐसेंबाळें ७
जन समस्त॥ तळमळित जालि दुःखें॥८२॥ निलजे कैकई
चावतांतु॥ नारामु नाद शरधु॥ सेखी ईसी त्या गिल पर
धु॥ वथा जाकांतु याकेला॥८३॥ परथ खधर्म साहिक॥
सप्रेम श्रीराम सेवक॥ तो न पाहे ईचे काळें मुख॥ त्या सि

हिंदुः खयादिधलं ॥ ८४ ॥ कै कयाकैलं जंचरित्र ॥ तं परधु
 मानिल अपवित्र ॥ पतिनिमालाय जील पुत्र ॥ सैख सावत्र
 दुःखीकैलं ॥ ८५ ॥ श्रीराम गेला वनंतरि ॥ रोसे अयिकिली
 यावरी ॥ परधु नराहे तिक मरी ॥ तौ हिरान भरीया कैला ॥
 ८६ ॥ मळोई चुकाळं मुख ॥ निज पाणिमारिलानिः शैख ॥ पुत्र
 दुहोविलं निदोख ॥ जगसिंदुः खई येनि ॥ ८७ ॥ कै कई पाहे
 ज्यास मोर ॥ हसणे साकि मुख जयवित्र ॥ स मुख धुं किति
 सवत्र ॥ करिनि मर मर नर नारी ॥ ८८ ॥ जवो रां हे जवो मुंडे ॥
 जवो कै कये कळ तोडे ॥ तिचे नि सावें कोडिलि धाडे ॥ जति
 उदं डे निंदिति ॥ ८९ ॥ कै कई पावली पुर महुः ख ॥ जगी दाख
 उनसेक मुख ॥ दिवासी त्या ऐ सिंदे ख ॥ लपे निः शैख जां

धारि॥९॥राजगृहीकोलाहल॥नरनारीदुःखप्रबल॥ले
थपावलेसुहृदसकल॥आलेतलाळऋषिवर्य॥१०॥
श्लोक॥मार्कंडेयो यमोद्गत्यो वामदेवस्य कश्यपः॥कासाय
नस्तु जाबाली गौतमश्च महामुनिः॥११॥एते द्विजासहा
मासैः पृथग्वान्यमुदिरयन्॥वशिष्टमेवाभिमुख्य श्रेष्ठं
राजपुरोहितं॥१२॥**टीका॥**दशरथे पौरथोर॥नगरीराहा
विलेऋषेश्वर॥राजनिधन आलेससर॥अलिपवित्रते
आईका॥१३॥मार्कंडेयो नोद्गत्य उत्तम॥कासाय न जा
बालि गौतम॥कश्यप वामदेव परम॥पवित्र नाम जयाये
॥१४॥ते समस्त हि महाऋषि॥वेगे आले राजसभे सि॥
प्रधान आले तयापासि॥राजदेहा सिद्ध नार्थ॥१५॥ये

कल्लिणतिकरावेदहन॥ येकल्लिणतिपुत्रेविण॥ कोण
 देईल्लहाजीवन॥ अधिकारपूणपुत्रासि॥ ९५॥ राया
 चेजप्रधान॥ तेसजपुत्रासमान॥ निखंतान्यायाचेनिद
 हन॥ अयोग्यप्रधानसपुत्रका॥ ९६॥ सिद्धजसमाधर्मप
 ति॥ तिसियोग्यसाधुसिद्धहति॥ हाअधिकारबंधेलागु
 नि॥ पुत्रजननिअयोग्य॥ ९७॥ ऋषीबालुतिसज्ञान॥ येथे
 वशिष्टाचेप्राधान्य॥ लोकांकाहिनबोलेंवचन॥ राजदेहनसं
 स्कारा॥ ९८॥ बुद्धिवंतबोलतुनादे॥ केपुत्रेयेईल्लेपुढे॥ त
 नेराजदेहापडतिकिडे॥ देहनराकडेकसावे॥ ९९॥ ऐसेंऋषी
 चेअनुवाद॥ करितिसंवादवेवाद॥ वशिष्टमर्यादाअगाध॥
 कायविबोधतोजाणे॥ १००॥ जाणेकर्मधर्मज्ञान॥ जाणेवेद
 शास्त्रविज्ञान॥ जाणेब्रह्मसमाधान॥ सासमानआननाहि॥

जया न्विया बचना सादि ॥ सूर्य मंडलित पेका वि ॥ त्या न्विया ज्ञाना
चिज गाध गोवि ॥ दुजा सृष्टि जसे ना ॥ २ ॥ ने णे वशिष्टे ये उ निज
पण ॥ तैल द्रोणी राजा तळु न ॥ ते णे देह विकार न व्हे जाण ॥
संरक्षण जतिय ले ॥ ३ ॥ शीघ्र सरथाचे आगमन ॥ यदर्थी सु
मंतु सत्ता न ॥ वशिष्टे दे उ निसन्मान ॥ लरा प्रयाण करि वित्त
॥ ४ ॥ सुमंता आजि यि ये काळि ॥ तुं ये कु आमु राया जवळि ॥
परशु आणा वात काळि ॥ माया मातुळितो आहे ॥ ५ ॥ शीघ्र
बैसो निया रथिं ॥ जो वे गीरी ज जनगरा प्रति ॥ सेटो न कै क
या फूपति ॥ भरतरा तो रा ने आणा वा ॥ ६ ॥ करु नि वशिष्टा
सिन मन ॥ सुमंते शीघ्र कै ले गमन ॥ आव वितो श्री रा मा
चे गुण ॥ करि रुदन पुनः पुना ॥ ७ ॥ श्री रा माचे रूप गुण ॥
आव वितो विरहो पूर्ण ॥ ये का जना दर्शना शरण ॥ पुढिल निरोप
ण अवधारा ॥ १०८ ॥ ॥ इति श्री भावार्थ रामायणे अष्टोत्थाकां

इएकानारटीकायां दशरथनिर्वाणो
नाम दशमप्रसंगः ॥१९०॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com